ख़ुतबए मसनूना के बाद :-

आऊज़ोबिल्लाहे-मिनशशेतानिर्रजीम

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

याअय्योहललज़ीना आमनू कोतेबा अलयकोमुस्ससियामो कमा कोतेबा अल्लज़ीना मिनक़बलेकुम लाअल्लकुम तत्तक़ून

रोज़े की फ़रज़ियत में इंसानी फ़ितरत की रियायतः-

मेरे दीनी भाईयों और बुज़ुर्गों और अज़िज़ों ! मैने अभी आपके सामने क़ुरआनशरीफ़ की वोह आयत पढ़ी है जिससे रमज़ानुल मुबारक में रोज़े की फ़रज़ियत का एलान हुआ और तमाम मुसलमानों, को और उस ज़माने के मुसलमानों को इसी आयत से इल्म हुआ और क़यामत तक यही आयत उसकी दलील रहेगी। इसमें कुछ बातें हैं सोचने और ग़ौर करने की, नुक्ते की, पहले हम उसका तरजुमा करेगें फिर एक ख़ास बात की तरफ़ इशारा करेंगे।

अल्लाह तबारक तआला इरशाद फ़रमाता है

ऐ वो लोगों जो ईमान लाये हो

इस ख़िताब में भी बड़ी बलाग़त और हिकमत है कि एक ऐसी चीज़ जो नफ़्स पर शाक़ है (नफ्स को अखरती है) और दुश्वार है जिसके लिए बड़ी हिम्मत की ज़रूरत है उसकी बुनियाद ईमान को बनाया गया और पहले ईमान का ज़िक्र किया गया के ऐ वोह लोगों जो ईमान ला चुके हो अल्लाह तआला की तमाम बातों को क़ुबूल करने का अहद कर चुके हो और दायरए इस्लाम में दाख़िल हो चुके हो और अपने को अल्लाह के हवाले कर चुके हो कि वह हमारा मालिक है हमारा हाकिम है जो हुक्म देगा हम उस पर अमल करेंगे इससे मतलब नहीं की उसमें कुछ मज़ा

www.abulhasanalinadwi.org

मिलेगा या नहीं दुनियावी फ़ायदा होगा या नहीं वोह आसान है या मुश्किल है एक बात है या दस बातें हैं एक मरतबा करना होगा या दस-बीस मरतबा करना होगा, सौ, पचास मरतबा करना होगा। इससे कोई बहस नहीं। हमने अल्लाह तआला की ग़ुलामी क़ुबूल कर ली। उसकी उबूदियत का तोक़ अपने गले में डाल लिया (उसकी इबादत करने को क़ुबूल कर लिया) और एलान कर दिया कि हम तो हुक्म के बन्दे हैं जो वह हुक्म देगा हम उसी पर अमल करेंगे। इसलिये ये अल्लाह तआला की हकीम ज़ात ही इस हुक्म को इस तरह शुरू कर सकती है। वर्ना दुनिया के जो क़ानून हैं जिन बातों का हुकुमतें ऐलान करती हें और जो नये नये क़ानून बनते हैं और जो नयी-नयी पाबंदियां लगाई जाती हें उनके लिये कहने की ज़रूरत नहीं होती कि यह करोगे तो बच जावोगे उसपर अमल ना करोगे तो सज़ा पाओगे। लेकिन अल्लाह तआला फ़रमाता है हालांकि वो हाकिमे मुतलक़ है ज़मीनो-आसमानों को पैदा करने वाला है और सबकी ज़िंदगियां सबकी जाने सबकी इज़्ज़तें उसी के क़ब्ज़े में हें किसी तरह कह देता और कह सकता था उसका हक़ था लेकिन उसने कहा- "याअययोहललज़ीना आमनू (ऐ वोह लोगों जो ईमान लाये हो।) तो अल्लाह तआला ने हम सब मुसलमानों की क़ुव्वते ईमानी को आवाज़ दी है। क़ुव्वते ईमानी को जगाया है और उसको बुनियाद बनाया है ऐ वोह लोगों जो इस बात का अहद कर चुके हो कि हमें तो बात मानना है अल्लाह की हम तो अल्लाह के हुक्म के बंदे हैं।

कोतेबा अलयकोमुस्सेयामो कमा कोतेबा अल्ललज़ीना मिनक़बलेकुम (तरजुमा) तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये जैसे कि तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गये थे।

येह इन्सान की फ़ितरत है। अल्लाह तआला फ़ितरते इन्सानी का बनाने वाला और उसका ख़ालिक़ है उसकी रियायत करने वाला भी है । किसी मजबूरी से नहीं अपनी हिकमत से भी अपनी रहमत से भी कि जब वोह किसी बात का हुक्म देता है तो इस बात के लिए ज़मीन तैयार कर देता है। कि इंसान उसको आसानी से क़ुबूल कर सके। इसलिए

www.abulhasanalinadwi.org

इन्सान की फ़ितरत है कि जो चीज़ उसको अनोखी और निराली मालूम देती है उससे घबराता है चौंक उठता है अच्छा यह भी करना होगा ? लेकिन जब उसको यह मालूम हो जाये कि यह होता आया है लोग करते रहे हैं तो फिर वह उसको सुनता है और ख़ुश गवारी के साथ मानता है और आसानी के साथ ताबेदारी करता है।

ऐ ईमान वालों तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये जैसे की तुमसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ थे। चुनांचे मज़ाहिब और इख़लाक़ियात की तारीख़ से और क़ोमों और मुल्कों की तारीख़ से भी ये बात साबित है कि हर मज़हब में किसी न किसी शक्ल में रोज़ा रहा है । मज़हबी तारीख़ी किताबों में तफ़सील मौजूद है कि उसकी क्या शक्ल और क्या तादाद थी। क्या वक़्त था और कहां से शुरू होता था क्या पाबंदियां थीं ये एक इल्मी तारीख़ी मसला है जिसकी यहां गुंजाइश नहीं है।

लाअल्लकुम तत्तक़ून (ताकि तुम मुत्तक़ी बन जाओ।)

तक़वे का सही मतलब :-

यहां एक बात की तरफ़ तवज्जह दिलाई है कि जब किसी ज़बान का लफ़्ज़ किसी दूसरी ज़बान में आता है तो अक्सर ऐसा होता है कि वो अपने असली मायने ही खो देता है और उसके साथ ज़हन के सोचने के बहुत से तरीक़े लग जाते हैं। इन्हीं में से एक लफ़्ज़ **तक़वा और मुत्तक़ी** का है। हमारे यहां मुत्तक़ी के मायने हैं बड़ा इबादत करने वाला, जो रातों को बहुत कम सोता हो, और जो ना सोता हो तो और ज़्यादा मुत्तक़ी है। और ना खाता हो और अगर वो लगातार इबादत करता हो तो और बड़ा मुत्तक़ी है और कसरत से नमाज़ पढ़ता हो। नमाज़ ही में उसका दिल लगता हो। जब देखो नमाज़ पढ़ रहा है तो और बड़ा मुत्तक़ी है। और ज़रा-ज़रा सी चीज़ मे शुबे से बचता हो तो भी मुत्तक़ी है। लेकिन अरबी में जहां से यह लफ़्ज़ आया है तक़वा के मायने ज़्यादा इबादत करने वाला और ज़्यादा रातों को जगने वाले के नहीं हैं। कि बड़ा इबादत करने वाला और रातों को जगने वाला, दिन को रोज़े रखने वाला, रातों को इबादत करने वाला, नमाज़ें पढ़ने वाला, बल्कि अरबी

www.abulhasanalinadwi.org

जबान में तक़वा के मायने हैं लिहाज़ करने वाला हर काम के करते वक़्त ये लिहाज़ करना कि येह काम कैसा है ? ख़ुदा को राज़ी करने वाला है या नाराज़ करने वाला है? जाइज़ है या नाजाइज़ ? दीन के मुताबिक़ है या ख़िलाफ़?

तक़वा के मायने हैं लिहाज़ो शरम की आदत, पासो लिहाज़ की आदत पड़ जाना। मसलन कोई बच्चा है उसको अगर सही तालीम दी गई है उसे अच्छा माहोल मिला है और उसकी सही तरबीयत की गई है। बड़ों का अदब करने लगता है । बड़ों के अदब के यह मायने हैं कि बड़ों के सामने कोई ऐसा काम ऐसी हरकत नहीं करेगा जो बेअदबी में शुमार हो। जिससे इन बड़ों की तोहीन होती हो या इन बड़ों का मज़ाक़ उड़ता हो या बेइज़्ज़ती होती हो तो कहा जाएगा इस लड़के को बड़ा पासोलिहाज़ है। अदब सीख गया है ऐसे ही तालिब इल्म का अदबो लिहाज़ ऐसे ही मुरीद का अदबो लिहाज़ ऐसे ही मुलाज़िम का अदबो लिहाज़ **(तो तक़वा के मायने हैं अदबो लिहाज़ के)** कि करने से पहले यह सोचना के ये काम कैसा है? उसको ख़ुश करने वाला है या नाराज़ करने वाला है। और अगर दीन के दायरे में देखिये तो ये देखना कि दीन और शरीयत के मुताबिक़ है या नहीं? अल्लाह तआला और उसके रसूल हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहे व सल्लम के फ़रमान के मुताबिक़ है या नहीं? **इसकी आदत पड़ जाना ये है तक़वा** चुनाचें उसकी दलील है कि हज़रत ऊमर रदीअल्लाह तआला अनहो जो फ़ारूक़ आज़म और अमीरूल मौमेनीन हैं और हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रदीअल्लाहो तआला अनहो के बाद सहाबा किराम रिदवानुल्लाहे तआला अलेहिम अजमईन में सबसे बड़ा दर्जा इन्हीं का है। मुसलमानों के खलिफ़ा थे अमीरूल मौमेनीन थे। क़ुरआन मजीद उनके सामने ही नाज़िल हुआ था और फिर अहले ज़बान हैं और अहले ज़बान भी कैसे हैं । के उस ज़माने की टकसाली ज़बान जो हर ज़माने में मोतबर रहेगी। सिक्का रायजुल वक़्त की तरह वोह वहीं पले बढ़े वही ज़बान बोलने वाले। और सहाबा किराम वो थे की किसी चीज़ के पूछने में उनको कोई शर्म नहीं आती थी। वो हर वक़्त इस फ़िक्र में रहते थे कि अपने इल्म को सही करें। और बढ़ायें तो उन्होंने हज़रत अबदूल्लाहबिन मसऊद का नाम लेकर कहा यह बताओ की तक़वा किसे

www.abulhasanalinadwi.org

कहते हैं तो उन्होंने जवाब दिया। अमीरूल मौमेनीन ! क्या आप ऐसे रास्ते पर चले हैं। कि दोनों तरफ़ कांटो की बाढ़ लगी हो। (इधर भी कांटो की क़तार और उधर भी कांटों की क़तार हों) और रास्ता तंग हो। हज़रत ऊमर रदीअल्लाहो तआला-अन्हो ने फ़रमाया हां ऐसा इत्तफ़ाक़ हुआ है उन्होंने कहा फिर आपने क्या किया? हज़रत ऊमर ने फ़रमाया दामन समेट लिया आस्तीन बगैरह देख लीं कि कहीं कांटों में फंस ना जायें। कहा यही तक़वा है। कि ज़िंदगी इस तरह गुज़ारी जाए के कहीं ऐसा ना हो कि कोई ऐसा काम कर बैठे जो ख़ुदा को नाराज़ करने वाला हो। मसले के ख़िलाफ़ हो नाजाइज़ हो तो इस आयत में जिसमें बहुत से लोग ग़ौर नहीं करते कि अरबी ज़बान के मिज़ाज से वाक़िफ़ नहीं हैं वह ये समझते हैं कि रोज़े इसलिये फ़र्ज़ किये गये कि हम मुत्तक़ी बन जायें। कि २९ दिन या ३० दिन रोज़े रखे रमज़ान ख़त्म हो गया ईद का चांद निकलने लगा तो वो मुत्तक़ी हो गये अल्लाहो अकबर । कि जिसने दिन को रोज़ा रखा कुछ खाया नहीं और कई-कई क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म किये रात में इबादत की और तरावीह पढ़ी ये मुत्तक़ी है। इसका मतलब ये नहीं है की इमतहान में पास हो गया और छुट्टी मिली। बल्कि इसका मतलब ये है कि रमज़ान के महीने में हलाल, पाक, तय्यब चीज़ें, रमज़ान के दिन के वक़्त में अल्लाह के हुक्म से अल्लाह की मर्ज़ी से पाक साफ़ चीजें छोड़ीं एक दिन दो दिन नहीं २९ दिन ३० दिन पानी नहीं पिया। हालांकि पानी सबसे बड़ी नयमत है **वजअलना मिनलमाए कूल्ला शैइन हय्य-** अल्लाह जल्ले शानहू फ़रमाता है कि हमने पानी ही से हर ज़िंदा चीज़ पैदा की है।

और खाना नहीं खाया, हालांकि अल्लाह तआला ने दिया था घर में वो चीज़ें मौजूद थीं हलाल कमाई से थीं लेकिन नहीं खाया। क्यों नहीं खाया? क्यों नहीं पिया? वो चीज़ें इन्सान बहेसियत इन्सान के और इन्सानी तक़ाज़ों से करता है ताल्लुक़ात भी इसमें हैं, तस्सरूफ़ात भी इसमें हैं। इसमें एमाल भी हैं ये सब चीज़ें हमने छोड़ीं महज़ अल्लाह के हुक्म से कि अल्लाह तआला ने सुबह सादिक़ से लेकर ग़ुरूब आफ़ताब तक हलालो पाक चीज़ों के इस्तेमाल करने से भी रोका है। तो तुम्हारे हलक़ से पानी का एक क़तरा न उतरने पाए तुम्हारे हलक़ में खाने

www.abulhasanalinadwi.org

का एक दाना न जाने पाए तो जब हमने अल्लाह के हुक्म से ये पाक और तय्यब चीज़ें छोड़ी हैं तो अब जब रमज़ानुल मुबारक ख़त्म हो गया तो इससे यह बात भी हममें वाज़ा हो जानी चाहिये कि जो नापाक चीज़ें हैं और नापाक क्या हैं हम आप समझते हैं कि जिसे गंदगी लग जाये गंदी चीज़ पड़ गई वह नापाक हो गई। जबके सबसे बड़ी नापाक चीज़ गुनाह है। अल्लाह तआला की नाफ़रमानी है। तो जिस तरह हमने अल्लाह के हुक्म से रमज़ान के दिनों में हलाल और पाक चीज़ें छोड़ीं तो इसी अल्लाह के हुक्म से ग़ैर रमज़ान के दिनों में गुनाहों के काम कैसे करें? हम अल्लाह को नाराज़ करने वाली चीज़ें क्यों कर गुज़रें। हम झूठ क्यों बोलें, हम झूठी गवाही क्यों दें, हम किसी मुसलमान की दिल आज़ारी क्यों करें, हम किसी का हक़ क्यों मारें, हम बोहतान क्यों लगायें, हम चोरी क्यों करें, हम ज़ुल्म क्यों करें, हम किसी का ख़ून क्यों बहायें, हम किसी का दिल क्यों तोड़ें बस सारी चीज़ें जो आप जानते हैं इन चीज़ों से बचने की आदत ख़्याल और ध्यान पैदा हो जाये **यह है तक़वा।** यह है रमज़ान का मक़सद और यह तो बच्चा भी समझ सकता है कि अल्लाह के हुक्म से हमने पानी छोड़ा, खाना छोड़ा अब अल्लाह के मना करने के बावजूद हम चोरी करें, हम झूठी गवाही दें, हम किसी की ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लें, हम किसी का हक़ मारें, हम बहन को, फुप्पी को, ख़ाला को, तरकए विरासत ना दें। हम शादी बियाह के मामलात में शरीयत के ख़िलाफ़ करें, हम फ़ज़ूल ख़र्ची करें, हम रिश्वत लें, हम असराफ़ में मुब्तिला हों, हम दहेज़ का मुतालबा करें और उसके लिए जान तक ले लें। अल्लाह तआला हमसे रमज़ान के इन २९-३० दिनोंमें हलाल और पाक नैमतें छुड़ाकर ख़ास वक़्त में छुड़ाकर हमारी मश्क़ कराता है कि हम गुनाहों के करने से बचें और अब जो काम भी करें ख़्याल करके करें। पहले सोच लें कि यह शरीयत के मुताबिक़ है या नहीं?

बस मेरे भाइयों! रमज़ानुल मुबारक का सबसे बड़ा तोहफ़ा रमज़ानुल मुबारक का सबसे बड़ा अहद और मुतालबा, रमज़ानुल मुबारक का सबसे बड़ा फ़ैज़ और असर यह होना चाहिये कि हमें ख़्याल करने की आदत पड़ जाये। और ख़ुदा की नाफ़रमानी से

www.abulhasanalinadwi.org

और उसकी मना की हुई चीज़ों से बचने का ख़्याल पैदा हो जाए। यह नहीं की हम बेख़्याली में कर गुज़रें और फिर ये नहीं बल्कि करके यह समझें कि रमज़ान तो गया हमने खाया पिया नहीं रोज़े हमारे पूरे हो गये और यह तो दुनियावी चीज़ें हैं उनसे रोज़ों का क्या ताल्लुक़। ये तो ज़िंदगी की चीज़ें हैं । बस अल्लाह जल्लेशानहू हमसे यह मश्क़, कराना चाहता है कि हमारी ये हमेशा की आदत पड़ जाए कि हम हर काम करने से पहले ये सोच लें। हम ये नहीं कहते की आप घर से निकलते वक़्त सोंचकर क़दम उठाइये ये नहीं। मतलब यह है कि जिसका ताल्लुक़ हुक्म शरई से हो किसी के हक़ के मुताल्लिक़ हो और हराम और हलाल का मसला हो, जाइज़ और नाजाइज़ के दायरे में आता हो उसको बग़ैर सोचे ना करें । और ये मालूम करके कि यह अल्लाह तआला को पंसद नहीं है यह शरीयत की तरफ़ से मना किया गया है इससे इसी तरह बचें बल्कि उससे ज्यादा बचें जितनी की रोज़े के दिनों में रमज़ान के ज़माने में दिन के अंदर आप खाने से बचते हैं उससे ज़्यादा इससे बचें

रमज़ानुल मुबारक का असल पैग़ाम :-

देखिये हम आपको एक बात नुक़ते की बताते हैं उसे लेकर जाएं इन्शा-अल्लाह उम्र भर के लिए काफ़ी होगी। सहाबा किराम हज़रत मोहम्मद सल्लललाहो अलेह व सल्लम से पूछा करते थे कि दीन के अहकाम बहुत हो गये हैं कोई एक बात ऐसी बता दीजिये जो जामे हो जिसे हम पल्लू में बांध लें, गिराह में बांध लें इसी तरह हम आपसे एक बात कहते हैं की सारी ज़िंदगी के लिए दस्तूरल अमल है वो क्या है हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहे व सल्लम ने फ़रमाया **लायूमेनू आहदो कुम हत्ता यकूना हौवाहो तबअन लेमा जेतोबेही** - मतलब - तुममें से कोई शख्स ईमान वाला नहीं हो सकता मौमिन नहीं हो सकता, जब तक की उसकी नफ़सानी ख़्वाहीश उसकी दिल की चाहत, उसके दिल की मांग, तबीयत की मांग, इसके ताबे ना हो जाए जिसको **मैं लेकर आया हूं।** और देखिये के हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहे व सल्लम से बढ़कर किसी के अख़लाक़ इतने बुलन्द और आली

www.abulhasanalinadwi.org

नहीं थे कोई अपनी अबदीयत पर इतना फ़ख्र नहीं करता था लेकिन यहां हुज़ूर सल्लल्लाहो अलेहे व सल्लम ने वाहिद मुतकल्लिम (एक वचन का शब्द) इख्तियार किया है और अपनी तरफ़ निसबत की है और उसमें ख़ास ज़ोर पैदा कर दिया है जिसको अदब का ज़ोक रखने वाले और शरीयत के भेदों को जानने वाले समझ सकते हैं। आप यूं भी कह सकते थे कि जब तक वो अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशों को अल्लाह के हुक्मों के और कुरआनों- हदीस के ताबे ना कर दे। लेकिन यहां पर हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलहे व सल्लम की नबुवत का जो मुक़ाम था और आपकी नबुव्वत का जो हक़ था, और आपकी नबूव्वत का जो दर्जा था और उसमें वो उस वक़्त मुख़ातिब की नफ़सियात का और उसके फ़हम और ज़ोक का आपने ख़्याल फ़रमाया के कम ऐसा हादिसों में आता है के आप सिग़ऐ वाहिद मुतकल्लिम बोलते हों (एक वचन का शब्द) के यहां पर **लायूमेनू आहदकूम हत्ता यकूना हो-वाहो तबअन-लेमा जेतो बेही-** तुममें से कोई आदमी उस वक़्त तक मौमिन (साहबे ईमान) नहीं हो सकता जब तक कि उसकी नफ़सानी ख़्वाहिशात इसके ताबे ना हो जायें जिसको **मैं लेकर आया हूं** । (मोहम्मद बिन अबदुल्लाह जिसको लेकर आये हैं कि आप नाम ले लेते मोहम्मद बिन अबदुल्लाह बिन अबदुलमुत्तलिब लेकर के आये हैं उसके ताबे ना हो जाये। इसलिए इसके अंदर एक ख़ास क़िस्म की ताक़त पैदा कर दी और उस जुमले में ग़ैरते नबूव्वत उसके अंदर है। उसमें ग़ैरते नबूव्वत है अल्लाह की ग़ैरत के बाद कोई भी ग़ैरत उसके बराबर नहीं । बादशाहों की ग़ैरत, इस ग़ैरत के सामने धूल है। यहां ग़ैरत नबूव्वत है जिसकों **मैं लेकर आया हूं**। जिसने उसके ख़िलाफ़ किया गौया कि उसने मेरी नबुव्वत के ख़िलाफ़ बग़ावत की मेरे मंसबे रिसालत से उसने सर्कशी की ।

हम लोगों को क्या करना चाहिये?

हम लोगों को चाहिये कि हर काम के करने से पहले ये ख्याल कर लें कि उसे अपनी नफ़सानी ख्वाहिशों से कर रहे हैं और ये हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहे व सल्लम के फ़रमान के ख़िलाफ़

www.abulhasanalinadwi.org

और आपकी शरीयत और क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ तो नहीं है? सारी ज़िंदगी के लिए काफ़ी है।

वोह काम जिनसे लोगों के हुक़ूक़ मुताल्लिक़ हों जिनसे नफ़्स का तक़ाज़ा पूरा होता हो या कोई बड़ा दुनियावी फ़ायदा हासिल होता हो जिसके लिए कोई बड़ा इक़दाम करना पड़ता हो। इससे पहले यह सोंच लें कि हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहे व सल्लम जो दीन और जो शरीयत लेकर आये हैं उसके यह ताबे और मातहत है। उससे यह मुसतग़नी है या बेनियाज़ है। बस सारी ज़िंदगी के लिए काफ़ी है। कोई मुरीद होता है, कोई शागिर्द होता है कोई ख़त्ते ग़ुलामी लिखता है, यह ख़त्ते ग़ुलामी है यह मुस्तक़िल ख़त्ते ग़ुलामी है (यह हमेशा के लिए ख़त्ते ग़ुलामी है) इसके सामने मुरीद, शागिर्दी सब धूल हैं। इसलिए कि यहां पर नबुव्वत का सवाल आ गया कि हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहे व सल्लम ने बहेसियत नबी के फ़रमाया, (बहेसियत किसी इंसान के नहीं, फ़रमाया।) तुममें से कोई ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि उसकी नफ़सानी ख़्वाहिश उस चीज़ के ताबे ना होजाये जिसको **मैं लेकर आया हूं**। कोई बादशाह हो अपने वक़्त का, सुल्तान हो, कोई बड़े से बड़ा फ़ातह हो, कोई बड़े से बड़ा अपने वक़्त का क़ारून और हामान हो, कुछ हो, सबके लिए ज़रूरी यह है कि हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहे व सल्लम जो लेकर के आये हैं उसके **मातहत अपनी ज़िंदगी को कर दे। उसके ख़िलाफ़ बिलकुल ना हो।**

इसको आप रमज़ानुल मुबारक का पैग़ाम समझें। यहीं सबक़ आप यहां से लेकर के जाएं। याद रखें कोई बड़े से बड़ा काम हो लड़के की शादी है। लड़की की शादी है, (दहेज़ का मसला भी इसी में आता है) ज़मीन का मामला है उसको हासिल करने के लिए ज़रा सी आंख बंद करके काम करने की ज़रूरत है। ज़्यादा मसले मसाइल से काम नहीं चलेगा वह हम पूंछ लेगें। ज़मीन के मामले में हम आज़ाद हैं, झूठी दस्तावेज़ पेश करके, झूठी क़स्में खा करके हम ले लें। आप मुलाज़िम हैं ५०,००० की रिश्वत मिल रही है १,००,००० की रिश्वत मिल रही है (और आजकल तो रिश्वत का दौर दौरा है) तो हर ऐसे मौक़े पर जहां कोई

www.abulhasanalinadwi.org

हुक्म, हुक्मे शरई मुत्ताल्लिक़ हो या हक़ूक़ूल इबाद मुताल्लिक़ हो (बंदो के हक़) जाइज़ और नाजाइज़ का शुबह हो वहां पर अपनी ख़्वाहिशे नफ़सानी, अपने फ़ायदे, अपनी फ़तह अपनी कामयाबी को ताबे बना दें। शरीयते मोहम्मदी के !

तुममें से कोई ईमान वाला नहीं हो सकता है **"लायूमेनू अहदोकुम"** आपसे बढ़कर कौन मुफ़्ती, आप से बढ़कर किसकी बात का एतबार हो सकता है। आप फ़रमाते हैं (सल्लल्लाहो अलेहे व सल्लम) तुममें से कोई उस वक़्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता यहां तक की उसकी ख़्वाहिशात ताबे हों जाएं उसके जिसको **मैं लेकर आया हूं।** (हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहे व सल्लम लेकर आये हैं) इसको याद रखें और हम दो तीन बातें काम की आप से और कहते हैं पता नहीं कि मिलना हो या ना हो - या मिलना हो और बात करने का मौक़ा ना हो।

एक बात तो यह है कि गुनाह सबसे होते हैं, अल्लाह तआला माफ़ फ़रमाए कौन है जो मासूम है। मासूम तो **सिर्फ नबी की ज़ात है।**

कबीरह गुनाहों से तौबा करने की ज़रूरत है :-

हमसे आपसे तो सग़ीरा गुनाह भी होते हैं और कबीरा गुनाह भी होते होगें। कि तमाम फ़ुक़हा और उलमा का इस पर इत्तफ़ाक़ है और अभी फ़ज़ाइले रमज़ान में (एक किताब का नाम) यह बात पढ़ी भी गई के बड़े बड़े गुनाह बग़ैर तौबा किये माफ़ नहीं होते हैं। (कबीरा गुनाह) इसलिए अच्छा है ईद के चांद से पहले और आप मस्जिद में बैठते हैं नमाज़ के इन्तज़ार में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हैं। सोच करके की कोई कबीरा गुनाह आपसे हुआ है ख़ुदा न ख़्वास्ता एहतीयातन कहता हूं तो कोई कबीरा गुनाह हुआ हो तो उससे तौबा करें, तौबा करना फ़र्ज़ है। जरूरी है लोग समझते हैं कि तौबा करना भी एक ज़िक्र है जैसे अल्लाह कह दिया, सुबहानल्लाह-सुबहानल्लाह, अलहमदोलिल्लाह, अल्लाहो अकबर, कह दिया या और कोई ज़िक्र कह दिया ऐसे ही यह तौबा, या अल्लाह मेरी तौबा, या अल्लाह मेरी तौबा, नहीं यह फ़र्ज़ है। अगर कबीरा गुनाह किया

www.abulhasanalinadwi.org

है तो तौबा करना फ़र्ज़ है सोच करके याद करके के ज़िंदगी में कोई गुनाह कबीरा हुआ है कि अल्लाह से तौबा करें अल्लाह से माफ़ी मांगे। इसके यक़ीन के साथ के या अल्लाह या अल्लाह मुझसे फ़लां वक़्त यह गुनाह हुआ है मैं तौबा करता हूं, मेरे इस गुनाह को माफ़ फ़रमा। इस तरफ़ बहुत कम लोग तव्वजह दिलाते हैं। और कम तव्वजह की जाती है। जो चीज़ें तरक़्क़ी करने वाली है रूहानी दीनी उन्ही को ज़्यादा कहा जाता है। ये दुनियावी बातें कहने वाले कम हैं। एक बात तो यह है कि कबीरा गुनाहों से तौबा करें।

हूक़ूक़ुल इबाद की अदायगी का अहतमाम कीजिये (बन्दों के हकों को अदा कीजिये)

और एक मसला यह भी है जिस पर सब उलमा का इत्तफ़ाक़ है कि हूक़ूक़ुल इबाद अपनी तौबा से माफ़ नहीं होते हैं। यहां तक की जिनसे मुत्तालिक़ है वो हुक़ूक़ वो माफ़ करे इसलिए अगर हुक़ुक़ुल इबाद हैं कि किसी से आपने क़र्ज़ लिया था, आपने दिया नहीं और इंकार कर रहे हैं, किसी से कोई चीज़ उधार ली थी अब आप देते नहीं, किसी की ज़मीन पर आपने क़ब्जा कर लिया है और इसी तरह जिनका ताल्लुक़ लोगों से है बंदे से है, उनकी मल्कियत और हक़ शरई से है उनसे माफ़ करवाइये। चाहे आप इसमें जितनी तोहीन महसूस करें और चाहे जितना झूकना और दबना पड़े, ख़ुशामद करना पड़े यह भी ज़रूरी है कि यह काम भी ईद से पहले हो जाए तो अच्छा है ओर यही दो तीन दिन हैं। आपके ज़िम्मे कितने हुक़ूक़ होगें न कोई आप बादशाह हैं ना सुल्तान हैं, ना कोई सदर जम्हुरिया हैं, ना वज़ीरेआज़म है, ना वज़ीरेआला हैं और ना किसी महकमे के कोई बड़े अफ़सर हैं। उनके ज़ुम्मे तो सेकड़ों हुक़ूक़ हो सकते हैं। वो जाने उनका काम जाने । हां लेकिन हम आप जो हैं किसी के ज़िम्मे दो हुक़ूक़ुल इबाद होगें किसी के ज़िम्मे तीन किसी के ज़िम्मे चार या इससे ज़्यादा। तो ये भी माफ़ करा लीजिये। हम मसाइल की बातें बता रहे हैं बुनियादी बातें कि अगर ये चीज़ें ध्यान में ना आईं तो ख़ुदा के यहां क़यामत के दिन.....

देखिये यहां तक आता है कि किसी के ज़ुम्मे कोई हक़ रह गया है तो अल्लाह तआला क़यामत में उसको बुलायेगा। उस वक़्त ना रुपया होगा ना पैसा होगा तो कैसे दिलायेगा, ऐसे की उसकी नेकियां जिसके ज़िम्मे हूक़ूक़ुल इबाद हैं उसको दे दी जायेगीं जिसका हक़ है। अगर हमने किसी से रक़म ली है तो क़यामत में हमारे पास रक़म तो होगी नहीं अल्लाह तआला नमाज़, रोज़ा या और कोई नैकी हमारी (अल्लाह महफ़ूज़ रखे) उसको दे दी जायेंगी और डरने की बात यह है कि उसके पास नेकियाँ ना होंगी तो उसकी बुराइयां लेकर उसके नामे आमाल में डाल दी जावेगी। बड़े डरने की बात है।

तो पहली चीज़ हमने कही कबीरा गुनाहों से तौबा, हुक़ूक़ुल इबाद से माफ़ी मांगना और उसका तसफ़िया कर लेना जल्द से जल्द और ईद से पहले कर लें तो और अच्छा। अगर वह साहब यहां ना हो जिनका हक़ आपके ज़ुम्मे रह गया है तो आप फ़िक्र मंद रहें बैचेन रहें परेशान रहें कि कहां मिलेंगे हम उनसे माफ़ करा लें। ये सब मन्सूसाते शरई हैं ।.क़ुरआन व हदीस की बातें जिन पर सबका इत्तफ़ाक़ है।

बच्चों की दीनी तालीम वक़्त का सबसे बड़ा मसलाः-

तीसरी बात ये जो हम आपसे कहना चाहते हैं कि अपने बच्चों की तालीम की फ़िक्र कीजिये। कम से कम उनका अक़ीदा (दिल में पक्का यक़ीन) दुरूस्त कराइये। कि अल्लाह तआला के सिवाए दुनिया को चलाने वाला इस कारख़ानये आलम को चलाने वाला किसी को ना समझें। और किसी का उसमें अमल दख़ल ना समझें। और ये ज़माना है हिन्दू देव माला का कि वह कोर्स के निसाब के ज़रिये से भी फैलाया जा रहा है। टेलीविज़न और रेडियों के ज़रीये से भी और अख़बारात और किताबों के ज़रिये से भी और मजलिसों के ज़रिये से भी और बाज़ ऐसी जमाअतें अक्सीरियत की हैं जो पूरे मुल्क के पैमाने पर काम कर रही हैं उनके ज़रिये से भी। ये बड़ी ज़रूरत है की अपनी आइन्दा नसल के अक़ाइद बचाने की पूरी-पूरी कोशिश की जाए। मैं बहुत कहा करता हूं लेकिन अच्छी बात १० बार कही जाए ५० बार कही जाए कोई शर्म की

बात नहीं। लखनऊ के एक बड़े जलसे में तक़रीर करते हुए हमने कहा था कि सोचने की बात है हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम कौन थे? हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम पैग़म्बर थे उनके बाप पैग़म्बर थे यानि हज़रत इसहाक़ अलेहिस्सलाम, उनके बाप पैग़म्बर थे यानी हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम यानी वह पैग़म्बर के बेटे और पैग़म्बर के पोते और ख़ुद पैग़म्बर और ख़ुद उनके बैटे भी पैग़म्बर यानी हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम और बेहरेहाल पैग़म्बर ज़ादे थे उनके जितने पोते नवासे थे वो सब पैग़म्बर ज़ादे थे यहां तो पीर ज़ादों का ख़्याल किया जाता है उलमा की औलाद का ख़्याल किया जाता है की उनका क्या पूछना....

अब ख़्याल कीजिये इतने बड़े पैग़म्बर, जब हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम का इन्तक़ाल होने लगा उस वक़्त आदमी सब भूल जाता है और याद भी रखता है तो दूसरी बातें की फ़लां जगह इतना पैसा रखा है इतना क़र्ज़ है ले लेना इतनी जायदाद है कुछ कहने का मौक़ा है तो यही कहा जाता है।

ये पैग़म्बर थे और वो पैग़म्बर की औलाद थे उन्होंने कहा और क़ुरआन करीम ने उसे बयान किया **'अमकुनतुम शोहदाअ इज़ हज़रा याक़ूबल मौत इज़ क़ाला लेबनी हे माताबोदूना मिम बादी, क़ालू, नाबोदो इलाहका व इलाहा आबाएका इब्राहिमा व इस्माइला व इसहाक़ा इलाहों-वाहेदु-व-नहनो लहू मुसलेमून ।'**

ऐ क़ुरआन शरीफ़ के पढ़ने वालों, सुनने वालों, क्या तुमको ख़्याल है तुम उस वक़्त मौजूद थे जब हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम का आख़री वक़्त आया और उन्होंने अपने सब लड़कों, पौतों नवासों, को जमा किया और ऐसे मौक़े पर सब जमा हो ही जाते हैं उनसे कहा और बोलने की फ़ुरसत नहीं वह तो पैग़म्बर थे अल्लाह, अल्लाह, करते रहते लेकिन हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने उसे इससे भी ज़्यादा ज़रूरी समझा उन्होने कहा मेरे बेटों, पोतों, नवासों, ''माता-बोदूना मिमबादी '' एक बात तुम मुझे यहबता दो कि मेरे बाद तुम किसको पूजोगे? तुम किसकी इबादत करोगे? क़ुरआन करीम इतना भी इंतज़ार में रखना नहीं चाहता फ़ौरन जवाब देता है वर्ना बीच में ज़रूर यह होगा अब्बाजान, दादा

www.abulhasanalinadwi.org

जान, नाना जान, यों कोई पूछने की बात है कितने दिन तक आप हमें बताते क्या रहे और हम किस घर के हैं किस चमन के फूल हैं और हम किस बाग़ के फल हैं और हम किनकी औलाद हैं। हमारे मुत्ताल्लिक़ आपको शुबह है लेकिन नहीं। **क़ालू ना बोदो इलाहका व इलाहा अबाइका**-हम उसीकी इबादत करेगें जिसकी आप इबादत करते आये हैं आपके वालिद हमारे दादा इसहाक़ अलेहिस्सलाम के माबूद की इबादत करगें अपने दादा के भाई हज़रत इस्माइल अलेहिस्सलाम के माबूद की इबादत करेगें और फिर हमारे परदादा हज़रत इब्राहिम अलेहिस्सलाम के माबूद की इबादत करेगें।

(नाबोदो इलाहका व इलाहा अबाइका इब्राहिम व इस्माइला व इसहाक़ इलाहूं-वाहेदवं-व-नहनो-लहू मुसलेमून) गौया कि हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने कहा क़ब्र में हमारी पीठ नहीं लगेगी और हम चैन और सकून की सांस नहीं लेगें उस वक़्त तक जब तक इसका इतमिनान ना कर लें कि तुम लोग किसकी इबादत करोगे तुम किस रास्ते पर चलोगे जब इन लोगों ने यह कह दिया तो उन्हें इत्मिनान हुआ।

हमको और आप सबको चाहे कतने आप नमाज़ी हों कितने आप रोज़ेदार हों कितने आप में से आलिम हों कितने मुफ्ती हों तबलीग व दावत में निकलने वाले हों चील्ले लगाने वाले हों मैं साफ़ कहता हूं सबको यह इत्मिनान हासिल कर लेना चाहिये चाहे वह वली हो जाए और लोग शहादत दें चाहे ग़ैब से आवाज़ आये कि तुम वली हो, तुम वली हो क्या वली बढ़ जायेगा पैग़म्बर से कोई वली बढ़ सकता है? हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम से। वह सय्य-दुल-औलिया थे वह नबीए बरहक़ थे ख़ुदा के और जब उनको यह इत्मिनान हासिल करने की ज़रूरत थी तो हम और आप किस शुमारोक़तार में हैं हमको इससे ज़्यादा इत्मिनान कर लेना चाहिये। उनका ज़माना फ़ितने का ज़माना नहीं था मैं साफ़ कहता हूं कि उस ज़माने में जो बुराइयां थीं ख़राबियां थीं वोह इस तरह मुन्तक़िल नहीं की जा सकती थीं जिस तरह आज के दौर में की जा रही हैं आज ग़िजा में वो चीज़ें मिला दी गई हैं आज पानी में वोह चीज़ें सराइयत कर गई हैं आज हवा में वोह चीज़ें मिल

www.abulhasanalinadwi.org

गई हैं आज वो स्कूलो की तालीम में और आज जो तक़रीर करता है उसमें भी वोह अक़ाइद आ गए हैं हम इस ज़माने में रह रहे हैं जहां हिन्दू देवमाला, कि कृष्णजी का यह क़ब्ज़ा था वो जो चाहते थे करते थे वो जहां उतरे सोना ही सोना बन गया रामचन्द्रजी के क़ब्ज़े में कारख़ानेए क़ुदरत था इस दुनिया के पैदा करने वाले, चलाने वाले.....

और इस दर्जे से कम की जो चीज़ें है वोह भी हमारे लिये बहुत ख़तरनाक हैं:-

आख़री बात आप से यह कहता हूं कि अपनी औलाद के मुताल्लिक़ इत्मिनान हासिल कर लीजिये उनको दीनी तालीम दीजिये इस्लामी मकतब में भेजिये। मस्जिद में मकतब क़ायम कीजिये तालीम का इंतज़ाम कीजिये। स्कूल में पढ़ते हों तो कोई वक़्त रखिये, ट्यूशन रखिये, उस्ताद को बुलाइये ट्यूशन फ़ीस दीजिये कि हमारे लड़के और लड़कियां इस क़ाबिल बना दें के कुछ इस्लामी मालूमात हासिल हो जाए और मोटी-मोटी बातें दीनियात के मुताल्लिक़ 'तालीमुल इस्लाम' पढ़ा दीजिये और ऐसी छोटी किताबें जो लिखी गई हैं पढ़ा दीजिये। घर की औरतों को भी ताकीद कीजिये कि अच्छे-अच्छे क़िस्से सुनाएं और दीन के मुत्ताल्लिक़ बातें बताएं। अगर हिन्दुस्तान में ऐसा ना हुआ तो उसका अन्देशा है कि ४०,५० वर्ष बल्कि २०-२५ वर्ष बाद नस्ल का बड़ा हिस्सा दीन से बिलकुल नावाक़िफ़ हो जायेगा। और अन्देशा ये है कि दीन का मज़ाक़ उड़ाने वाला दीन की बेइज़्ज़ती करने वाला ना बन जाए। जगह-जगह मकतब, मदरसे, क़ायम कीजिये जहां क़ायम हैं वहां मदद कीजिये की टूटने ना पाएँ ख़त्म ना होने पाएं। अपने घरों में भी दीनी तालीम का इंतज़ाम कीजिये।

इस मुल्क में आप कैसे रहें ?

और आख़री बात यह है कि अपने अख़लाक़ ऐसे बनाइये कि आपके पड़ोसी ग़ैर मुस्लिम मुतासिर हों और इस्लाम के मुताले का शौक़

www.abulhasanalinadwi.org

पैदा हो उनके अंदर (इस्लाम के बारे में मालूमात हासिल करने का शौक़ पैदा हो) ये किस क़िस्म के लोग हैं रास्ते से जा रहे थे ईट पड़ी थी हटा दी नल खुला था बंद कर दिया। पचासों आदमी गुज़र गये किसी को ख्याल नहीं आया। इसी मुल्क में रहते हैं मुसाफ़िर उतर रहे, चढ़ रहे हैं, किसी को तोफ़ीक़ नहीं हो रही हम गये नल बंद कर दिया किसी ने पूछा इसका जवाब यही कि अल्लाह की नैयमत है हम जिस मुल्क में रहते हैं हमारा यह फ़र्ज़ है। इसी तरीक़े से रास्ते में कोई तकलीफ़ देह चीज़ को हटा दें निगाहें नीची हों किसी ग़ैर मोहर्रिम को निगाह उठा कर ना देखें। और आप गाली ना दें हद से बढ़कर ग़ुस्सा बेजा ग़ुस्सा ना आये। इसी तरह से आप मौहल्ले में रहते हों एहले मोहल्ले को इत्मिनान हो कि हमारे मुसलमान भाई यहां रहते हैं यहां बहू, बेटियों की इज़्ज़त मेहफ़ूज़ है यहां चोरी का ख़तरा नहीं अज़ान हो रही हो किसी से कहा रोकने को तो हिन्दू कहने लगे अरे इसे ना रोको इसकी वजह से यहां बहुत सी बीमारियां और वबाएं नहीं आ पाती। यहां बड़ी बरकत होती है। बरकत का लफ़्ज़ तो हिन्दुओं के यहां है नहीं कोई ऐसा लफ़्ज़ कहा, ख़ैरियत है, यहां इनकी वजह से।

आप इस तरह अपने दीन को, अपनी इबादतों को, ऐसा बनाइये कि उनके दिल मे इस्लाम की इज़्ज़त पैदा हो। और क़द्र आये और अगर कोई आपको सताए तो वोह आपकी तरफ़ से जवाबदेह हों और आपको बचाएं कि नहीं, नहीं, इन्हें हमारे मुल्क में रहना चाहिये हमारे मुल्क में इनकी वजह से मालूम नहीं कितनी आफ़तें और वबाएं टल रही हैं और उनकी बजह से दुनिया बनाने वाले की कैसी अच्छी नज़र है। ज़माने में ज़रूरी है कि आप ऐसे अख़लाक़ रखें आपका और जो मुसलमान नहीं हैं उनका फ़र्क़ मालूम हो जाए। **लाअल्लकुम तत्तक़ून (ताकि तुम मुत्तक़ी बन जाओ)**

जाइज़ और नाजाइज़ के लिहाज़ करने की आदत हो जाए ये हलाल है ये हराम है ये ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ है और ये ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ है यह मिज़ाज हो जाए , तबियत बन जाए, और रमज़ान शरीफ़ मिज़ाज बनाने के लिये आता है, मिज़ाज तबदील करने

के लिए आता है, सिर्फ़ आदत ही नहीं मिज़ाज बनाने के लिए आता है। दूसरी चीज़ कि जो कबीरा गुनाह हो गये हों उनसे तौबा कीजिये अल्लाह से माफ़ी मांगिये और दुनिया से जाने से पहले-पहले यह काम कर लीजिये। तीसरे ये कि हुकूक़ुल-इबाद जो आपके ज़िम्मे हैं उनकी माफी तलाफ़ी कर लीजिये चौथे ये कि अपने बच्चों की, औलाद की, तालिमो तरबियत की फ़िक्र और इंतज़ाम कीजिये। पांचवी चीज़ ये कि अख़लाक़ ऐसे, बनाइये ग़ैर मुस्लिमों में भी क़द्र वक़अत पैदा हो बल्कि इस्लाम के बारे में जानने का शोक़ पैदा हो। और वे कहें कि हमको अपना लिट्रेचर लाइये, दिखलाइये आपका मज़हब, आपका दीन, क्या कहता है हम जानना चाहते हैं की इस्लाम ने आपको कैसा अच्छा बना दिया है।

एक नमूना येह भी था :-

एक छोटा सा क़िस्सा आपको सुना देता हूं जो इस जगह से मुनासिबत रखता है और यहीं का फ़ैज़ है यहीं वोह तरबीयत हुई थी कि हज़रत सैय्यद अहमद शहीद रहमतुल्लाहअलेह ने जब पैशावर फ़तह कीया क़ब्ज़ा हो गया तो यहां रहने वाले पठानों ने मुजाहेदीन में से किसी का हाथ पकड़ा (अक्सर यहीं के रहने वाले थे रायबरेली, सुल्तानपुर, के अतराफ़ के उन्नाव, कानपूर और फिर सहारनपूर, मुज़फ़्फ़रनगर के अतराफ़ के बहुत से लोग थे) कि एक मुज़ाहिद का हाथ पकड़ा और कहा क्या हिन्दुस्तानियों की आखें कमज़ोर होती हैं? दूर की चीज़ नज़र नहीं आती पैदाइशी तौर पर आंख कमज़ोर होती है उन्होने जवाब दिया नहीं हमें सब नज़र आता है कुछ कमज़ोर वमज़ोर नहीं कहने लगे नहीं कुछ बात है ज़रूर उन्होने कहा, नहीं, कुछ बात नहीं, हमारी आंखें बिलकुल ठीक हैं । मगर उन्होंने कहा आप येह सब पूछ क्यों रहे हैं उन्होंने जवाब दिया हम ये देख रहे हैं कि आप लोग जबके बाज़ दो साल से निकले हुए हैं कोई एक साल से, कोई, कई महिनों से निकले हुए हैं अपने अपने घर छोड़ कर हिन्दुस्तान छोड़कर आये हैं बाज़ बिलकुल जवान हैं उनके अन्दर तो जज़्बा होता, लेकिन हमने नहीं देखा कि किसी ने किसी ग़ैर मोहररीम की तरफ़ निगाह उठाकर देखा हो

www.abulhasanalinadwi.org

हमने कहा एक हो, दो हों, चार हों, तो ख़ेर लेकिन हमने देखा कोई नहीं, कोई भी, नज़र ग़ैर मोहर्रिम की तरफ़ उठाता ही नहीं। फ़ितरी तक़ाज़ा है आगे कुछ न हो, देख तो लेते, उन्होंने कहा यह बात नहीं नज़र हमारी बिलकुल ठीक है येह तरबीयत हमारे अमीरूल मोमेनीन की है (हज़रत सय्यद एहमद शहीद रहमतुल्लाह अलेहे की है) और फिर येह की अल्लाह तआला का हुक्म है। **क़ुल्लिल्-मोमेनीना-य-ग़ुद्दू मिन अबसारे हिम वयहफ़ोज़ू फ़ोरूजहुम** (अहले ईमान से कह दो कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें) येह होना चाहिये और यही है। याअय्योहल-लज़ीना-आमनू इनतक़ूल्लाहा यजअललकुम फ़ुरक़ाना ए ईमान वालों अगर तुम अल्लाह का पासो लिहाज़ करोगे तो अल्लाह तआला तुमको शाने इम्तयाज़ी अता फ़रमायेगा।

तुम कहीं जाओगे पहचाने जाओगे यह मुसलमान है इसकी निगाहें नीची हैं इसने ग़ैर मोहर्रिम को देखा नहीं और इसतरह बच कर संभलकर चल रहा है गोया कि ख़ुदा को याद कर रहा है। अगर यह हमारी हालत होती और सीरत होती तो आज हिन्दुस्तान का नक़शा ही दूसरा होता।

सियासी कोशिशें, टकराव जज़बाती तक़रीरें, अपने दिल की भड़ास निकालना ज़ोरदार तक़रीरें करना कि नाम हो, हमारे सर सहरा बंधे, और हमारा सर ऊंचा हो, ये तरीक़ा नहीं था। तरीक़ा यह था की हम ऐसी ज़िंदगी इख़्तियार करते यह नहीं हो सका अब जो मौक़ा है उसमें ये तरीक़ा अख़्तियार करें।

अल्लाहुम्मा वफ़फ़िक़ना लिमा तोंहिब्बो वतरदा:-मतलब ए अल्लाह तआला तू हमको तोफ़ीक़ दे उन कामों के करने की जो तुझको पसंद हों और जिन से तू राज़ी हो।

www.abulhasanalinadwi.org